International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

लखनऊ घराने की गत वादन में भूमिका

Prakash Chandra Arya[1], Dr. Gagandeep Hothi[2]

[1]Research Scholar, Kumaun University Nainital
[2]Assistant Professor Department of Music, Kumaun University Nainital

सारांश

उस्ताद सिद्धार खां ने सन 1600 ई0 के आस-पास तबला वादन की परंपरा की नीव डाली । इस परंपरा के अंतर्गत उन्होंने दिल्ली घराने की उत्पत्ति की। दिल्ली घराने की उत्पत्ति के कुछ वर्षो पश्चात् ही तबले के अन्य पांच घरानों की भी उत्त्पत्ति हुई। इन्हीं पांच घरानों में से लखनऊ घराने की नीव उस्ताद सिद्धार खां के पौत्र उस्ताद मोदू खां व उस्तादबख्शू खां ने डाली। तबला वाद्य मुख्यतः संगति का वाद्य रहा, परन्तु धीरे-धीरे इस वाद्य पर एकल वादन भी होने लगा ।एकल वादन हेतु तबले की कई रचनाएँ निर्मित हुई । इन्हीं रचनाओं में एक विशेष रचना गत भी है । गत रचना का वादन प्रत्येक घराने में उसकी वादन शैली के अनुरूप होता है | गत रचना का वादन लखनऊ घराने में भी पूर्ण रूप से होता है । जैसे दुपल्ली गत, तिपल्ली गत, चारबाग गत आदि । लखनऊ घराने की गतों में भी अन्य रचनाओं के सामान ही नृत्य व पखावज के बोलों की प्रधानता देखने को मिलती है।

मुख्य शब्द-तबला वादन,लखनऊ घराना,गत।

लखनऊ घराने की उत्पत्ति एवं विकास-तबले के प्रसिद्ध लखनऊ घराने की परंपरा उस्ताद सिद्धार खां के पौत्र उस्ताद मोदू खां व उस्ताद बख्शू खां से प्रारंभ हुई ।[1] कुछ लोगों का यह मत है कि लखनऊ घराने के नवाब द्वारा मोदू खां व उस्ताद बख्शू खां को आमंत्रण भेजा गया, तत्पश्चात वे लखनऊ आकार बस गए तथा यह तबले के लखनऊ घराने की नीव डाली । तथा कुछ लोगों का यह मानना है कि 18 वीं सदी के मध्य में दिल्ली पर नादिरशाह के आक्रमणों के फलस्वरूप मोहम्मद शाह रंगीले का मन संगीत की ओर से हटने लगा, फलस्वरूप उनके दरबारी संगीतज्ञदिल्ली छोड़कर अन्यत्र बसने लगे । फलस्वरूप उस्ताद मोदू खां व उस्ताद बख्शू खां लखनऊ आकर बस गए व यहाँ लखनऊ घराने की नीव डाली। स्वाभाविक रूप से दिल्ली की वादन शैली से पृथक जो थाप प्रधान लव-स्याही का अधिक प्रयोग करके एक नयी शैली का निर्माण किया और लखनऊ घराने की परंपरा स्थापित की।[2]

लखनऊ घराने की वंश परंपरा व शिष्य परंपरा-लखनऊ घराने की उत्पत्ति का श्रेय उस्ताद मोदू खां व उस्ताद बख्शू खां को जाता है। मोदू खां के वंशजों में उस्ताद मम्मू खां का नाम प्रमुख है। उस्ताद मम्मू खां के पुत्र मुहम्मद खां थे तथा इनके दो पुत्र बड़े मुन्ने खां व उस्ताद आबिद हुसैन खां हुए। इनमें बड़े मुन्ने खां पुत्र वाजिद हुसैन खां हुए जो आबिद हुसैन खां के दामाद भी थे। वाजिद हुसैन खां के पुत्र उस्ताद आफाक हुसैन खां एक उच्च कोटि के कलाकार हुए । आफाक हुसैन खां के पुत्र उस्ताद इल्मास हुसैन खां वर्तमान में लखनऊ घराने का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

लखनऊ घराने के वंश परंपरा निम्न तालिका द्वारा दर्शायी गयी है-

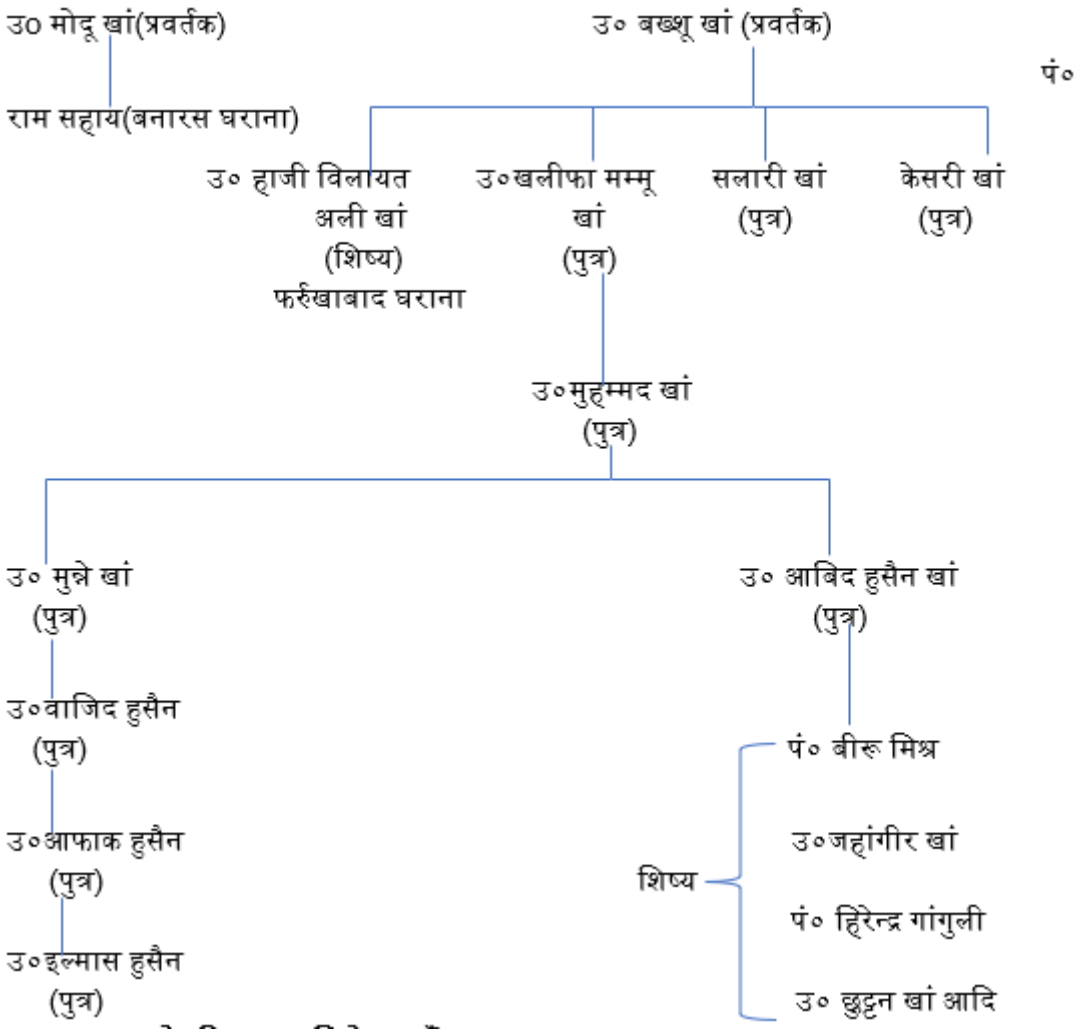

लखनऊ घराने की वादन विशेषताएँ-

1. नृत्य व पखावज के प्रभाव के कारण यहाँ के तबले के बोलों में खुलापन व जोरदार आवाज़ देखने को मिलती है. लखनऊ घराने को थापिया घराने के रूप में भी जाना जाता है।
2. यहाँ की वादन शैली में स्याही तथा लव के बोलों की प्रधानता रहती है.
3. लखनऊ घराने में पूरे पंजे से तबला वादन होता है तथा बायें तबले पर अंगूठे द्वारा मींड घसीट करने की प्रथा है।
4. लखनऊ घराने के कायदे कम से कम एक आवर्तन के होते हैं. यहाँ छोटे कायदों का चलन नहीं है।
5. यहाँ कायदे की अपेक्षा गत, परन, टुकड़े, चक्करदार, फरमाइशी आदि रचनाओं का वादन अधिक होता है।
6. लखनऊ घराने में धिर-धिर, तक कडान, घडान, दिंग, धेत-धेत, गदिगन, कत ता आदि बोल प्रचुरता से बजाए जाते हैं. धेट-धेट धागे तेट, कड़धा तेट धागे तेट का प्रयोग लखनऊ घराने का एक प्रतीक बन गया है।[3]
7. ठुमरी गायन की संगति की अधिकता के कारण इस घराने में लग्गी लड़ियों का प्रयोग अधिकता से देखने को मिलता है।

गत- प्रत्येकघराने की वादन शैली के अनुरूप विभिन्न बोलों की मुलायम रचना जो तिहाई रहित तथा तिहाई सहित हो गत कहलाती है।गत रचना का सम्बन्ध यदि देखा जाए तो पूर्ण रूप से गति से है । इस रचना में भांति-भांति की लय-लयकारियों का समावेश रहता है। इसी कारण ही इसे गत का नाम दिया गया होगा।

गत की परिभाषा के सम्बन्ध में कुछ विद्वानों के विचार निम्न प्रकार हैं-

पं0 विजय शंकर मिश्र कहते हैं "तबले पर बजने वाली रचनाओं में गत बहुत महत्पूवर्ण है , गत सामान्यतः टुकड़े की तरह का बोल होता है , किन्तु टुकड़े और गत में काफी भिन्नताऐं भी है। सबसे बड़ी भिन्नता यह है कि इसमें टुकड़े की तरह तिहाई नहीं होती, अनेक लयों, गतियों में वादन गत की प्रमुख विशेषता है।"[4]

इस संबंध में **सुधीर माईणकर** कहते हैं- गत की संकल्पना को व्याख्या में व्यक्त करना मुश्किल काम है , लेकिन यह अत्यंत महत्वपूर्ण एवं सर्वांगसुन्दर वादन प्रकार होने के कारण इसके बारे में विस्तृत विवेचना की गयी है। गत की संकल्पना पखावज की परन की संकल्पना से निर्मित हुई।[5]

डॉ. एस. आर. चिश्ती जी के अनुसार- तबले पर बजने वाले मुलायम बोलों की ऐसी निश्चित रचना जिसे आसानी से ठाह, दून या चौगुन में बजाया जा सके और जिसके पलटे न किये जा सकें और जो कायदा, टुकड़ा, परन और पेशकार आदि से भिन्न हो, उसे गत कहते हैं।[6]

गतों के प्रकार- गत रचना केकई प्रकार देखने को मिलते हैं। परन्तु कुछ विद्वान गत के 52 प्रकार बतलाते हैं।[7] गतों के कुछ प्रकार निम्न हैं-

दुपल्ली गत,तिपल्ली गत,चौपल्ली गत,पाँच पल्ली गत,तिहाई रहित गत,तिहाई सहित गत,मिस्र जाति की गत, अतीत गत,अनागत गत,चारबाग की गत,जोड़े की गत,कबाड़ी की गत,सवाली गत,जवाबी गत,गौपुच्छा गत,लाहोरी गत,जनानी गत,मर्दानी गत,बढिइये की गत,लालकिले की गत आदि।

गत रचना की विशेषताएँ

1. स्वतंत्र तबला वादन में उठान,पेशकार,कायदा,रेला आदि रचनाओं के पश्चात् गत रचना का वादन समस्त घरानों में विशेष रूप से किया जाता है।
2. गत रचना में मुख्य रूप से कई प्रकार की चाल या गतियों का समावेश देखने को मिलता है।
3. गत रचना में हिंदी भाषा के काव्य तथा छंदों का परस्पर भाव समाहित रहता है।
4. गत रचना घरानों के बोलों पर निर्भर करती है। यह रचना प्रत्येक घराने की वादन शैली पर आधारित होती है।
5. गत रचना किसी भी ताल के सम से प्रारभ होकर ताल की अंतिम मात्र पर समाप्त होती है।
6. गत रचना के बोल परण से छोटे तथा मुलायम होते हैं।
7. गत तिहाई रहित तथा तिहाई सहित दोनों प्रकार की होती हैं।
8. कुछ गतों में खाली-भरी का भी पूर्ण प्रयोग किया जाता है।

लखनऊ घराने की कुछ गतें इस प्रकार हैं जिनका वादन प्रमुखता से होता आ रहा है-

1.लखनवी गत-

धागेनधा गेनधाऽ धाऽऽघेघे नकधिन | तकधिन तकधिन तकधिन तूनाकता

X 2

तकतक तिनतिन तकटत कटधाऽ | धाऽघेघे नकधिन कतकघे तकधिन

0 3

ताकेनता केनताऽ ताऽकेके नकतिन | तकतिन तकतिन तकतिन तूनाकता

X 2

तकतक तिनतिन तकटत कटधाऽ | धाऽघेघे नकधिन कतकघे तकधिन[8]

0 3

2.चारबाग की गत-

धिनघेड़ानग धिनघेडाऽन धिनघेडाऽन धिनघेडाऽन

X

धागेनागेधिन धागेनागेधिन धागेनागेधिन धागेनागेधिन

2

घेड़नगधिन घेड़नगधिन घेड़नगधिन घेड़नगधिन

0

धागेऽदिगिन धागेऽदिगिन धागेऽदिगिन धागेऽदिगिन

3

दिगनगनग दिगनगनग दिगनगनग दिगनगनग

X

धेनगतकिट धेनगतकिट धेनगतकिट धेनगतकिट

2

धात्रकधेतेटे कतगदिगनधात्रकधेतेटे कतगदिगन

0

धात्रकधेतेटे कतगदिगनधात्रकधेतेटे कतगदिगन[9]

3

3.गत लखनऊ घराना-

धाऽघेघे नकधिन तकधिन तकधिन |

X

तकधिन तूनाकता तकतक तिनतिन |

2

तकतत कतधाऽधाऽऽघे नकधिन |

0

कतकघे तकधिन धागेनधा गेनातिन |

3

ताऽकेके नकतिन तकतिन तकतिन |

X

तकतिन तूनाकता तकतक तिनतिन |

2

तकतत कतधाऽधाऽऽघे नकधिन |

0

कतकघे तकधिन धाऽऽघेनकधिनकतकघेनकधिन |धा[10]

4.गत उस्ताद मोदू खान-

धाऽऽत किटधिन्न केतकगे तकधिन्न |

X

तकिटत किटधेत धागेत्रक तिनाकता |

2

तातिनाना तिनानाऽ तिरकिटतिना किडनग |

0

तकिटधा तिना किटतक धाऽधाऽ धिरधिरकत | धा[11]

3 x

लखनऊ घराने की गत वादनमें भूमिका - प्रत्येक घराने के सामान ही लखनऊ घराने में भी गतों का पूर्ण रूप से वादन होता है।लखनऊ घराने के प्रणेता उस्ताद मोदू खान व बख्शू खान के काल से वर्तमान तक देखा जाए तो लखनऊ घराने के उस्तादों ने कई गतों का निर्माण किया जिनका वादन लखनऊ घराने के अतिरिक्त सभी घरानों में पूर्ण रूप से हो रहा है। फर्रुखाबाद जो मुख्य रूप से गतों के लिए जाना जाता है, इस घराने के जन्मदाता उस्ताद हाजी विलायत अली ने भी लखनऊ घराने से ही तबले की शिक्षा ग्रहण की थी ।ऐसा माना जाता है की उस्ताद बख्शू खां ने अपनी पुत्री मोतीबीबी को तबले की शिक्षा पोरादन की थी,और आगे चलकर इनका विवाह अपने शिष्य विलायत अली खां के साथ कर दिया । उस्ताद बख्शू खां के पुत्र उस्ताद सलारी खां साहब का गत वादन में विशेष वर्चस्व था।उस्ताद मोदू खां साहब का भी गत वादन में विशेष नाम रहा। मोदू खां जी से तबले की शिक्षा ग्रहण करके पंडित रामसहाय जी ने बनारस घराने की उत्पत्ति की। ऐसा भी कहा जाता है की उस्ताद मोदू खां जी की पत्नी पंजाब के किसी बड़े उस्ताद की पुत्री थी तथा तबले की अच्छी जानकार थी, उस्ताद मोदू खां जी की अनुपस्थिति में ये ही पंडित राम सहाय जी को तबले की शिक्षा दिया करती थीं।लखनऊ घराने की वादन शैली पर कत्थक नृत्य का पूर्ण प्रभाव देखने को मिलता है । कत्थक नृत्य की ही भांति यह उठान से एकल वादन का प्रारंभ किया जाता है। लखनऊ घराने में कोई भी रचना चाहे वो कायदे हों,रेला हो या गत हो सभी में कत्थक के बोलों का समावेश रहता है।

यदि गत की बात करें तो लखनऊ घराने की गतें थाप तथा लव प्रधान होती हैं । लखनऊ घराने पर पखावज वाद्य का प्रभाव रहा है, जिस कारण यह की कुछ गतों पर पखावज का भी प्रभाव देखने को मिलता है । लखनऊ घराने के प्रणेता उस्ताद मोदू व बख्शू खां जी की कई गतें आज हमें सुनने को मिलती हैं। जिससे यह स्पष्ट होता है की प्रारंभ से ही लखनऊ

घराने में गत वादन पूर्ण रूप से होता चला आ रहा था । लखनऊ घराने में दुपल्ली गत, तिपल्ली गत,चौपल्ली गत,चारबाग की गत आदि गतों का वादन आज भी प्रमुखता से देखने को मिलता है । लखनऊ घराने की कई गतों में लड़ीनुमा बोल देखने को मिलते हैं,जो कत्थक की लड़ी से मिलते जुलते लगते हैं । लखनऊ घराने की गतों में खाली-भरी का भी प्रभाव देखने को मिलता है।भांति-भांति की लयों का प्रदर्शन लखनऊ की गतों का प्रमुख सौन्दर्य है।लखनऊ घराने के समस्त घरानेदार तबला वादक हुए जिन्होंने लखनऊ घराने की गत वादन की परंपरा को अग्रसारित किया । उस्ताद मोदू खान व उस्ताद बख्शू खान से चली यह परंपरा वर्त्तमान तक चली आ रही है ।उस्ताद मम्मू खां,उस्ताद आबिद हुसैन,उस्ताद विलायत अली खां,उस्ताद वाजिद हुसैन,उस्ताद मुन्ने खां,उस्ताद मियां तिलंगा,उस्ताद मुहम्मद खां व उस्ताद आफाक हुसैन खां आदि लखनऊ घराने के प्रमुख तबला वादकों में से हुए जिन्होंने लखनऊ की गत वादन की परंपरा को आगे बढ़ाया।

यदि तबला एकल वादन में देखा जाए तो लखनऊ घराने की गतों का विशेष प्रभाव देखने को मिलता है।

लखनऊ घराने की गतों मेंमुख्यतःधिनगेन,धाड़ागेन,धिरधिर,तकतक,तूनाकता,नकधिन,कतकघेतक,धा sघेघे आदि बोलों की प्रधानता देखने को मिलती है ।वर्तमान में उस्ताद इल्मास हुसैन खान, पंडित स्वपन चौधरी आदि लखनऊ घराने की गत वादन परंपरा को अग्रसारित कर रहे हैं।

निष्कर्ष-निष्कर्षस्वरुपयह कहा जा सकता है कि गत रचना लखनऊ घराने की वादन रचना में विशेष महत्त्व रखती है।गत रचना किसी तबला वादक के भाव को प्रदर्शित करने का सशक्त माध्यम है । गत रचना में विभिन्न प्रकार के भाव व लय देखने को मिलती है। लखनऊ घराने की गतें तबला एकल वादन को रंजकता प्रदान करती है । कई गतों में बोल दोहराते हुए चलते हैं,जो इस रचना को सौन्दर्यता प्रदान करते हैं । गतों में कई प्रकार की लय लखनऊ घराने की प्रमुख विशेषता है।लखनऊ घराने में कई गतों का निर्माण हुआ जिनका वादन लखनऊ घराने के अतिरिक्तसभी घरानों में हो रहा है।लखनऊ घराने की गतें कुछ निश्चित तथा विशेष बोलों पर ही आधारित होती हैं । लखनऊ घराने के निर्माण से लेकर कई दिग्गज कलाकार हुए हैं जिन्होंने लखनऊ घराने का प्रतिनिधित्व किया, गत वादन में लखनऊ घराने को विशेष पहचान दिलाई।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मिस्त्री डॉ. आबान ई.,(1984),पखावज और तबले के घराने एवं परंपराऐं,स्वर साधना समिति बम्बई,पृ.सं.-145
2. मिश्र पंडित विजयशंकर,(2020),तबला पुराण,कनिष्क पब्लिकेशन,पृ.सं.-23
3. मिस्त्रीडॉ. आबान ई.,(1984),पखावज और तबले के घराने एवं परंपराऐं,स्वर साधना समिति बम्बई,पृ.सं.-150
4. त्रिपाठी डॉ. शिवेंद्र प्रताप,2022,तबला विशारद,कनिष्क पब्लिकेशन,पृ.सं.-142
5. पटेल श्री जमुना प्रसाद,2011,तबला वादन की विस्तारशील रचनाएँ,कनिष्क पब्लिशर्स,पृ.सं.-257
6. चिश्ती डॉ. एस.आर.,2012,तबला संचयन,कनिष्क पब्लिशर्स,पृ.सं.-209
7. पूर्वोक्त पृ.सं.-211
8. मिस्त्री डॉ. आबान ई.,2007,तबले की बंदिशें,संगीत सदन प्रकाशन इलाहाबाद,पृ.सं.-178
9. गुरूजी डॉ. विजय कृष्ण जी से प्राप्त
10. मिस्त्री डॉ. आबान ई.,(1984),पखावज और तबले के घराने एवं परंपराऐं,स्वर साधना समिति बम्बई,पृ.सं.-153
11. गुरूजी डॉ. विजय कृष्ण जी से प्राप्त